

क. संघर्ष की शुरुआत

- ❖ परमेश्वर के खिलाफ विद्रोह मानवता के अस्तित्व से पहले ही अस्तित्व में था (उत्पत्ति 3:1)। यीशु ने इस प्राणी को, जो परमेश्वर और उसके प्राणियों के बीच अविश्वास का बीजारोपण करता है, "शत्रु" कहा, जिसकी पहचान उसने शैतान के रूप में की (मत्ती 13:39)। क्या परमेश्वर ने शैतान को बनाया, यानी क्या परमेश्वर ने एक दुष्ट प्राणी को बनाया?
- ❖ बाइबल हमें बताती है कि शैतान लूसिफ़र नामक एक स्वर्गदूत है (यशायाह 14:12)। यह स्वर्गदूत परिपूर्ण और सुंदर बनाया गया था (यहेजकेल 28:12)। उसे सर्वोच्च पद पर आसीन किया गया था जिसकी एक स्वर्गदूत आकांक्षा कर सकता था: संरक्षी करूब (यहेजकेल 28:13-14)।
- ❖ परमेश्वर ने उसे, उसके सभी बनाए गए प्राणियों की तरह, चुनने की स्वतंत्रता दी और, बेवजह, लूसिफ़र ने विद्रोह करने का फैसला किया, और परमेश्वर के सिंहासन पर कब्जा करने की आकांक्षा की (यहेजकेल 28:15; यशायाह 14:13-14)।

ख. स्वर्ग में विद्रोह

- ❖ स्वर्ग के सिंहासन पर कब्जा करने की अपनी इच्छा में, लूसिफ़र ने स्वर्गदूतों में दिव्य सरकार के न्याय के बारे में संदेह पैदा किया। क्या वे सभी स्वतंत्र नहीं थे? गंभीर और संभवतः अन्यायपूर्ण या मनमानी कानूनों के आगे क्यों झुकें?
- ❖ लूसिफ़र शैतान, अभियुक्त बन गया (प्रकाशितवाक्य 12:10; अय्यूब 1:6, 9-10)। उसने अपना दृष्टिकोण बदलने के लिए परमेश्वर के सभी प्रेमपूर्ण निवेदनों को अस्वीकार कर दिया।
- ❖ विद्रोह एक खुला संघर्ष बन गया, एक ऐसा युद्ध जहाँ प्रत्येक स्वर्गदूत को अपना निर्णय लेना था। 1/3 स्वर्गदूतों ने शैतान का अनुसरण किया, जबकि बाकी परमेश्वर के प्रति वफादार रहे (प्रकाशितवाक्य 12:4a)।
- ❖ आज भी युद्ध जारी है। शैतान अभी भी सक्रिय है। वह प्रत्येक व्यक्ति को परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह करने के लिए उकसाने का प्रयास करता है। केवल दो पक्ष हैं। वे जो परमेश्वर की व्यवस्था का पालन करना चाहते हैं, या जो इसे अस्वीकार करते हैं। निर्णय हमारा है (व्यवस्थाविवरण 130:11, 16, 19; यहोशू 24:15)।

ग. पृथ्वी पर विद्रोह

- ❖ परमेश्वर ने स्वर्गदूतों को पापरहित, उत्तम वातावरण में बनाया। इसी तरह, परमेश्वर ने मनुष्य को पाप से मुक्त एक आदर्श वातावरण में बनाया (उत्पत्ति 1:31)।
- ❖ परमेश्वर ने हमें भी स्वतंत्र रूप से चुनने की शक्ति के साथ बनाया। उसने आदम और हव्वा एक सरल आदेश दिया: "पर भले या बुरे के ज्ञान का जो वृक्ष है, उसका फल तू कभी न खाना" (उत्पत्ति 2:17)।
- ❖ शैतान चतुराई से उसने अपना लक्ष्य प्राप्त कर लिया। आदम और हव्वा ने परमेश्वर पर संदेह किया, उसकी अवज्ञा की (उत्पत्ति 3:6, 9-13, 19)। आदम ने पाप के प्रवेश के लिए द्वार खोल दिया, और इस प्रकार मृत्यु सभी मनुष्यों में फैल गई (रोमियों 5:12)। क्या हम सब आदम के पाप की कीमत चुका रहे हैं?
- ❖ हम में से प्रत्येक अपने स्वयं के पाप के लिए कीमत चुकाता है: "क्योंकि सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं" (रोमियों 3:23)।

घ. प्रेम प्रतिक्रिया देता है

- ❖ अवज्ञा के परिणामों की घोषणा करने से पहले ही, परमेश्वर ने आदम और हव्वा को बताया कि उनके उद्धार के लिए एक योजना है (उत्पत्ति 3:15)।
- ❖ मानवता ने स्वेच्छा से स्वयं को सृष्टिकर्ता से अलग कर लिया था। लेकिन अपने कृतघ्न बच्चों को त्यागने की बजाय, परमेश्वर ने उन्हें विश्वास से परे प्रेम करके अपना असली चरित्र प्रकट किया (यूहन्ना 3:16)।
- ❖ पापी के लिए मृत्यु शाश्वत नियति नहीं होनी चाहिए। यीशु ने अपनी जान से पाप की कीमत चुकाकर अपना प्रेम दिखाया (रोमियों 5:8)।
- ❖ हमारे अंदर ऐसा कुछ भी नहीं है जो हमें परमेश्वर के प्रेम के योग्य बनाता हो। हालाँकि, कलवारी में यीशु द्वारा बहाए गए खून की हर बूंद के साथ, परमेश्वर हमें बताता है: "मैं तुमसे प्रेम करता हूँ।"

ड. संघर्ष आज

- ❖ आज, यीशु स्वर्गीय पवित्रस्थान में हमारे लिए मध्यस्थता कर रहा है (इब्रानियों 9:24; 7:25)।
- ❖ क्रूस पर बहाए गए अपने लहू के आधार पर, यीशु हमें पिता के सामने - और ब्रह्मांड के सभी निवासियों के सामने - न्यायपूर्ण, सिद्ध लोगों के रूप में प्रस्तुत करता है, जो स्वर्ग में जगह पाने के योग्य हैं।
- ❖ इसलिए, हमें यीशु के माध्यम से विश्वास के साथ परमेश्वर के पास आने के लिए आमंत्रित किया गया है (इब्रानियों 4:15-16)।
- ❖ यीशु चाहता है कि हम अपने जीवन की प्रत्येक आवश्यकता के लिए उस पर भरोसा करें (यूहन्ना 14:13-14)। जहाँ भय है, वहाँ वह शांति लाता है; जहाँ अपराध है, वहाँ वह क्षमा लाता है; जहाँ कमजोरी है, वहाँ वह ताकत लाता है।
- ❖ यीशु की सबसे बड़ी इच्छा हमारे साथ अनंत काल तक रहने की है (यूहन्ना 17:14)। क्या यही आपकी भी सबसे बड़ी चाहत है?